ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

चित्रा मुद्गल के कहानियों में कामकाजी नारी के विविध रूप

मरियाम्मा मैत्यु
(रिज़र्च स्कोलर,संत थॉमस कॉलेज,पाला)

चित्रा मुद्गल आधुनिक युग की परिवर्तित नवचेतना की प्रतिनिधि रचनाकार है।विषयवस्तू की दृष्टि से उनको सृजनधर्मिता विस्तृत और विविधता से संयुक्त है।समकालीन जीवन की विसंगति,बोध,संत्रास - तार्किक वृद्ध समस्याओं,स्त्री - पुरुष मानसिकता से लेकर आर्थिक परिदृस्य,राजनैतिक,अवमूल्यन आदि विषय उन्होंने अपने साहित्य को चौमुखी रूप प्रदान किया है।चित्रा मुद्गल के कहानियों में विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत नारियों की दफ्तर की समस्याएँ प्रस्तुत करती है। शिक्षा के बल पर आज की नारी चार दीवारी की कैद से स्वतंत्र हो चुकी है।शोषण के तरीके से कुछ राहत पा चुकी है।चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत नारियों की दफ्तर की समस्याएँ भी अनेक हैं।जिनमें पुरुष सहयोगियों की यौन विकृति और अश्लीलता प्रमुख है।

कार्यालयीन दायित्व और शोषण की शिकार नारी

चित्रा मुद्गल के "दरमियान' कहानी में घर - दफ्तर के कार्यो की अधिकता से उत्पन्न मानसिकता थकान के कारण अचानक उत्पन्न "मासिक धर्म' की पीड़ा आकांक्षा को इतना आहत कर देती है कि वह यह साचने को विवश हो जाती है कि,क्यों हुई वह औरतजात औरत होना नरक है नरक।ऊपर से दफ्तर के पुरुष सहयोगी अपनी घृणित यौन टिप्पणियों और हरकतों से वहाँ के माहौल को इतना बदबुदार बनाए हुए है,कि उससे क्षुब्ध आकांक्षा चप्पल लेकर सहयोगी के प्रतिकार का उत्तर देती है।

"मुआवजा' कथा में विमान परिचारिका शैलू का ससुरालवानों द्वारा आर्थिक दोहन और मानसिक उत्पीड़न के खिलाफ ससुराल का परित्याग कर मायके आ जाना और अपनी संपत्ति को नारी निकेतन को दान देने का संकल्य लेना जिससे निराश्रित महिलाएँ स्व - रोजगार की दिशा में तत्पर होकर अपने पैरों पर खड़ी हो सके।ये सभी तथ्य आज की नोकरीपेशा नारी के "स्व'के विस्तार,वैचारिक ऊर्जा और गंभीर चिंतन एवं शोषण के विरुद्ध बगावत के परिचायक है।"बावजूद इसके' कथा में आधुनिक "एक्जक्यूटिव' सभ्यता के दंभ का मुखौटा ओढ़े गौयल अपनी पत्नी प्रीती से अन्य दोस्तों की बीबियों की तरह व्हिस्की पीने,ब्रिाज खोलने और खुले यौन संबंधों का आकांक्षी है।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

"बोनीयम' के रिकार्डस पर नाचते हुए मिस्टर खन्ना का हल्के से कंधे पर होठ रखने की शिकायत पर गोयल का उत्तर होता है "टेक इट ईजी'।इस एक्जिक्यूटिव सभ्यता के विनियम को अस्वीकार करने की स्थिति पर पत्नी की अमानुषी मार – पीट गोयल के पौरुष की शान है। इस प्रकार विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत नारियाँ उनके दफ्तर के सहयोगियों के शोषण का शिकार बनती है।

अविवाहित कामकाजी नारी

विभिन्न कार्यालयों में नारियों में हमें अविवाहित नारियों की संख्या अधिक मिलती है।उसका कारण यह है कि उसका चुनाव तुरन्त हौ जाता है।उसे चुनते समय अधिकांश अधिकारी उसके यौवन को ध्यान में रखते हैं।स्टेनों,पर्सनल सेक्रेटरी,रिसेप्शनिस्ट,हवाई सुंदरी,टेलीफोन ऑपरेटर आदि ऐसे स्थान है जहाँ एक से बढ़कर एक सुन्दर युवतियाँ चुन ली जाती है।

"लाक्षागृह' कहानी का सुनीता को मैट्रिक करने के बाद ही रेलवे में नौकरी मिल गयी।सुनीता का अपने कार्यालय के सहयोगी भार्गव से सगाई होती है।उनके परिवारवाले बेरोजगार आशा से विवाह करवाना चाहते है।भौतिक सुख – समृद्धि और जीवन में ऐशोआराम का आकांक्षी भार्गव सिन्हा सुंदर बेरोज़गार कन्या की अपेक्षा बदशक्ल सुनिता जो उनके कार्यालय में काम करनेवाली से सगाई करता है। "सौदे की कोई शक्ल सूरत नहीं होती।मेरे यार!सोच आठ सौ रुपये महिना कमानेवाली कहाँ मिलेगी?"लिफाफा' कहानी की नायिका ओबेराय होटल में रिसेप्सनिष्ट है। इस कहानी में एक माँ अपने बेटी के स्वच्छंद यौन व्यवहार को बढ़ावा देती है।वह नौकरीपेशा होने के कारण माँ उसे कुछ नहीं कहती।

विवाहिता कामकाजी नारी

"ताशमहल' कथा में आज के सामाजिक परिवेश में बढ़ते पुनर्विवाह के सभी व्यावहारिक परलुओं को भी दर्शाया गया है।उच्च पद पर कार्यरत शोभना का प्रथम पति से उत्पन्न पुत्र बीमार है और उसे विशेष देख – रेख और संरक्षण की जरूरत है।उसके दूसरे पति के लिए ये सब नार्मल बात है।पति और सास दूसरे पुत्र पर पूरी ममता उड़ेल रहे हैं,क्योंकि वे उनका खानदान का वारिस और अपना खून है।रोनू आने के बाद बच्चू के प्रति उसका व्यवहार बदल गया।बच्चू जब बीमार पड़ा था तब उसकी जिम्मेदारी कोई लेने को तैयार न था।कार्यालय में नौकरी करने के नाते उसे रोनू को क्रैंच में ही छोड़ना पड़ता है।पुनर्विवाह,आदमी सेक्स और स्वार्थ के लिए

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

करता है पर औरों के बच्चे जैसा स्नेह दे नहीं पाता।सौतेले बाप की संकल्पना अभी भारत की भूमि में पनपी नहीं है।

विधवा कामकाजी नारी

चित्रा मुद्गल का साहित्य नारी अस्मिता और स्त्री मुक्ति को रचनात्मक आधार है।पति की मृत्यू के पश्चात जो स्त्री बिना आभूषण,बिना श्रृंगार रंगहीन वस्त्र धारण किए जीती है उसे विधवा कहा जाता है।लेखिका की ग्राम्य परिवेश से सम्बद्ध कृतियों में नारी अन्याय और शोषण से त्रसित अपनी करूण दश में पाठकों के ह्मदय में सहानुभूति उत्पन्न करती अपनी मुक्ति के लिए सह्मदयों का आह्वान करती है।गाँवों में अभी भी रूढ़ियों,परम्पराओं का बंधन है।जहाँ नारी सीमित चार दीवारी में घूंघट परम्परा के अनुपालन में आबद्ध है।इसकी झलक "जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' में विधवा सुक्खन भौजी के रूप में मिलती है।जगदम्बा बाबू विकलांगों के सामान वितरण के कार्यक्रमों में महिलाछायाकार उनके पुत्र और भौजी का आँचल माथे से ऊँगली भर भी पीछे नहीं सरकता।

पर्दे में बंदी इन स्त्रियों की मुक्ति और अज्ञानता का विरोध "लगड़बग्घा' कथा में उपस्थित है,जहाँ इलाहाबाद के शिक्षित बच्चे गाँव से आयी विधवा मौसी पछांहवाली के घूँघट को विरोध कर उसे समझाते है कि,""ढोर ढमारो को भी रात भर खूँटे से बांधे रखकर सुबह दूध - दूहकर हाँक दिया जाता है,ऊसर बंजर में घास - फूस चरने - विचरने।उनको इतना भी मोहलत नहीं।इस कथा में लेखिका स्त्रियों के लिए केवल यहीं संदेश देती है कि,"" लड़कियों को कुछ देना है तो विद्या देनी चाहिए माँ - बाप को। बहन और बच्चों की यह शिक्षा पछांहवाली को नया जन्म देती है और वह अपनी पुत्री पुनिया को डॉक्टर बनाने का संकल्प लेती है।गाँव में उसके जेठ इसके लिए तत्पर नहीं,क्योंकि अनपढ़ पुनिया को कम दहेज में किसी भी अयोग्य वर की डेहरी डका सकते हैं।लेकिन पछांहवाली पहले भूख हड़ताल के माध्यम से बेटी के शिक्षा की माँग को पूरा करवाना चाहती है।"लकडबग्घा' वास्तव में सामंती शोषण,विधवा नारी का शोषण के विरुद्ध एवं स्त्री - शिक्षा की वकालत के साथ पर्दे में बंदी स्त्रियों के विरोध की कथा है।

"नतीजा' कहानी में नायिका पूरबी दी "होम' बाल सुधार गृह की प्रमुख है।इस कथा में विधवा होने के तीसरे वर्ष बच्चों से नाता तोड़ केतकी दी होम को समर्पित हो गई थी।चारों बहुओं की चाकरी करने की बजाए शेष जीवन मधुर वृंदावन में गुजरने की बजाय जीवन को

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

उद्धेश्यपूर्ण बनाने का निश्चय किया।बच्चियों के विरक्त ऊब तन - मन को प्रेरित करने का श्रेय पूर्ण रूप से पूरबी दी को ही जाता है।उन्होंने ही समझाया था ""अपना घर - संसार वे भोग चुकी है।बहू बेटों को अपना घर - संसार अपनी लाग - लगन के संग भोगने दे।वे आए और उन लोगों से जुड़े जिनको उनकी जरूरत है।देह व्यापार के नरक में पड़ी,सड़ रही निर्वासित दुर्गाओं की बच्चियों को पाले।''इस प्रकार विधवा केतकी दी जैसी महिलाएँ अपना बचा हुआ जीवन समाज - सुधार में लगाकर इन सेक्स वर्करों की बच्चियों का जीवन सुधारने में लगा देती है।

तलाकशुदा एवं परित्यक्ता कामकाजी नारी

"मुआवजा' कहानी की शैलू को अपनी मौत के बाद भी तलाकशुदा पति के अन्यायी लालच का शिकार होना पड़ता है।इस कहानी कनिष्क विमान दुर्घटना में यात्रियों को बचाने की चेष्टा में जान की बाजी लगाने वाली विमान परिचारिका नीरजा मिश्र की सत्य घटना पर आधारित है।कहानी में विमान परिचारिका शैलु,जो पहले मॉडलिंग किया करती थी उसका विवाह सुमित के साथ हुआ।सुमित को उसका मॉडलिंग करना पसन्द नहीं था।इसके लिए उसे तरह - तरह की यातनाएँ दी गई। अंतत: समझदारी से दोनों ने अलग होने का फैसला कर लिया।अब जब शैलू की मृत्यु हो चुकी है,सुमित उसकी मौत का मुआवजा लेने को उद्यत हो उठा है जबकि शैलु के माता - पिता मुआवजे की धनराशी " वनिता आश्रम को दान देना चाहते हैं।प्रस्तुत कहानी में चित्रा जी ने समाज की उस प्रवृत्ति पर प्रकाश ड़ाला है,जिसमें पुरुष नारी का जीवन पर शोषण करता है,किन्तु उसकी मौत के बाद भी उस पर अपनी मिल्कियत स्थापित करना चाहता है।जिन्दगी भर उसके शरीर को अपना माल समझकर,चाहे जैसा उसका इस्तेमाल कर उसकी मृत्यू के बाद भी उसके मुआवजे पर हक जताने की पाशवी प्रवृत्ति की और चित्रा जी ने संकेत किया है।

"पाली का आदमी' एक एसे व्यक्ति की कहानी है,जिसके लिए वात्सल्य,स्नेह और कर्तव्य जैसे आरक्षित गुण हों,जो एक जगह तो प्रकट होते हैं और दूसरी जगह उसकी आवश्यकता होने पर भी लुप्त हो जाते हैं।रवि का विवाह तब हुआ जब वह पढ़ाई कर रहा था।उसकी पत्नि तीसरा दर्जा फेल एक ग्रमीण युवती थी,जिसे रवि प्रेम नहीं करता था।उसकी एक लड़की है लल्ली।रवि को संदेह है कि वह उसकी बेटी नहीं है।रवि अपने पहले विवाह की बात छिपाए रखते हुए नीरू से दूसरा विवाह करता है।रवि अपनी दुसरी पत्नि की बेटी सोनू की गुड़िया की शादी के

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-9 No.03 September 2020

लिए तो उसकी जिद् पर छुट्टी लेकर घर रहता है,जबकि लल्ली के विवाह में,स्वयं बेटी के आग्रह के बावजूद मात्र आशीर्वाद देने भी नहीं जाता।आधुनिक जीवन में संदेह के आधार पर स्त्री और बेटी का परित्याग एक बड़ा सामाजिक अपराध है।रवि का यह प्रवृत्ति अपनी निर्दयता और वात्सल्यहीनता का ही परिचय दाती है।इस कहानी के माध्यम सेअनमेल विवाह से उत्पन्न इस समस्या के प्रति चित्रा जी ने ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल की कहानियों में कामकाजी स्त्री के अनेक पहलू दिखाई देते हैं।उनकी कामकाजी नारी एक ओर कार्यालय में अनेक पुरुषों की नज़रों को झेलते हुए काम करती है तो दुसरी ओर पति की आँखों में मँडराने वाले संदेह के बादलों का भी सामना करती है।उसके कामकाजी होने के केरण वह अपने बच्चों के लिए भी समय नहीं दे पाती।अन्य स्त्रियों की तरहआराम से जीवन बिताने की स्वतंत्रता न होने का दु:ख भी उसे है,फिर भी वह संवेदनशून्य,यंत्रवत और जड़ होने का बाध्य है।उसका घर और बाहर दोनों ओर शोषण होता है।नारी होने के कारण अपने शरीर से प्राप्त पीड़ा को भोगना उसकी विवशता बनती है।कहीं नौकरी के कारण परिवार में उसे प्रतिष्ठ प्राप्त होती है, कहीं नौकरी बदशक्ली पर दवा का काम करती है तो कहीं नौकरी में व्यस्त होने के कारण पति के व्यभिचार के प्रति आँखें मूँदने के लिए विवश दिखाई देती है।चित्रा मुद्गल की कुछ कहानियोम में विधवा या तलाकशुदा नारियों की समस्याओं का चित्रण हुआ है।इसमें अधिकांश नारियाँ इस प्रकार की हैं कि पति से करती हैं।ये स्त्रियाँ केवल अकेली ही नहीं रहतीं बल्कि अपनी आकांक्षाओं को मारकर अपने पर आश्रितों के लिए जीने का प्रयास करती हैं।चित्रा जी की इन नारियों की विशेषता है कि इनमें कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता के दर्शन नहीं होते।

संदर्भ

1. के.वनजा, चित्रा मुद्गल एक मूल्यांकन
2. डॉ.कल्पना पाटील, चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य
3. डॉ.गोरक्ष थोरात,चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन

Copyright @ 2020 Authors